गवाहियाँ

एक सेवानिवृत्त पासवान अब भी यीशु और उसके लोगों के विषय में सीख रहे हैं

''हमें यीशु के साथ स्कूल जाना है,'' इर्विन कोर्नेलसन का यही कहना है। लगभग 100 वर्षीय सेवानिवृत्त पासवान प्रतिदिन बाइबल पढ़ते हैं: ''मैं अब भी सीख रहा हूँ जो यीशु मुझे सिखाना चाहता है।''

मेनोनाइट वर्ल्ड कॉंफ्रेंस (एमडब्लयूसी) ने हमेशा कोर्नेलसन के सामने व्यापक संसार का एक दृष्टिकोण रखा है। अब वे एक वरिष्ठ के रूप में अबोट्सफोर्ड, बी.सी. कनाडा में अपना समय व्यतीत कर रहे हैं, और एमडब्ल्यूसी के समाचार पत्र उनके घर के पार संसार का उनके लिए एक प्रवेशद्वार हैं।

1920 और 1930 के दशक में एमसीसी और एमडब्ल्यूसी के आरम्भ के समय की उत्सुकता को वे स्मरण करते हैं जब इन संस्थाओं द्वारा उक्रेन में संकट के समय अपना कार्य आरम्भ किया गया, वे दक्षिण प्रशिया (अब पोलैण्ड) के एक छोटे गाँव में तब अपने लड़कपन में थे: ''ग्रह के दूसरे छोर (अमरीका) से मेनोनाइट लोग आने वाले थे।''

वे बताते हैं, ''यही वह समय था जब उन्होंने विश्वव्यापी मेनोनाइट कलीसिया को जाना।''

इर्विन कोर्नेलसन, फोटो: कार्ला ब्राऊन

वे आगे कहते हैं कि जब वे अपनी आयु में बड़े होते जा रहे थे, ''परमेश्वर, मण्डली, मेनोनाइट, उनके जीवन का केन्द्र बिन्दु थे।'' तौभी, उन्होंने जर्मन एयरफोर्स में नौकरी के लिए जाने का निर्णय लिया। शान्ति के पक्ष में मेनोनाइट कलीसिया की शिक्षा के कारण वे यह निर्णय नहीं ले पा रहे थे कि उन्हें किस पक्ष की ओर जाना चाहिए; एक गरीब किसान का पुत्र होने के कारण, बारह वर्ष की सेवा के बाद मुफ्त शिक्षा की प्रतिज्ञा ने सेना में शामिल होने सम्बन्धी मुद्दों को शान्त कर दिया।

कोर्लेसन कहते हैं कि द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, ''मुझे किसी पर गोली चलानी नहीं पड़ी।'' वे रेड क्रास के लिए कार्य कर रहे थे, और उनका कार्य था लोगों को बचाना: ''हमने प्रत्येक व्यक्ति को निष्पक्ष हो कर बचाया। एक मसीही के रूप में इस प्रकार की सेवा को पूरा कर मुझे अच्छा लगा।''

उनकी माता यह चाहती थी कि वे एक मिश्नरी बने। विवाह के पश्चात उनके ससुर ने, जो एक कलीसिया में अभिषिक्त थे, यह प्रबन्ध कर दिया कि कोर्लेसन बाइबल कक्षाओं में अध्यापन का कार्य करेंगे, और शीघ्र ही उन्हें, युद्ध के तुरन्त बाद पबों में प्रचार करने की जिम्मेदारी सौपी गई।

जब वे कनाडा आ गए, तो उन्हें यह अवसर मिला कि वे विन्नीपेग और वान्कोवर के मेनोनाइट बाइबल कॉलेजों में कुछ पाठ्यक्रमों का अध्ययन करें, और साथ ही साथ वे शेरब्रुक मेनोनाइट चर्च, वाक्कोवर, बी.सी. में पास्टर के रूप में सेवाएं भी दे रहे थे। वे कहते हैं कि अपने झुण्ड की देखभाल करते हुए ''मैं जितना सीख सकता था, मैंने उतना सीखने का प्रयास किया।''

एमडब्ल्यूसी के चार विश्व सम्मेलनों में भाग लेने और एमडब्ल्यूसी के समाचार पत्रों को पढ़ने के द्वारा, ''मैं विभिन्न देशों के भाई बहनों के बारे में जानकर बहुत खुश हूँ जो ऐनाबैपटिस्ट दर्शन को पूरा करते हैं।'' वे कहते हैं, ''हमें यह कहने में संकोच नहीं करना चाहिए कि हम कौन हैं।''

वे एक मार्मिक घटना को स्मरण करते हुए बताते हैं कि स्ट्रासबर्ग सम्मेलन में उनकी माता ने दो जापानी महिलाओं को गले से लगाया था; वे एक दूसरे की भाषा अलग होने के कारण आपस में बातचीत न कर सकीं, परन्तु इस तरह से उन्होंने एक समान विश्वास और प्रेम को व्यक्त किया।

एमडब्ल्यूसी के लिए उन्होंने अन्तिम बड़ी यात्रा जिम्बाब्वे विश्व सम्मेलन के अवसर पर की। ''मैं लोगों के साथ रहना चाहता था,'' इसलिए उन्होंने एक परिवार के साथ ठहरने के विकल्प का चुनाव किया। ''मेरा आज भी उनके साथ सम्पर्क कायम है।''

इस उम्र में, वे अब लम्बी यात्राएं नहीं कर सकते, परन्तु ''पिछले सम्मेलन (16वाँ) में न जा पाना मेरा लिए कठिन समय था।''

''मुझे इस बात पर विचार करना बहुत पसन्द है कि विश्व के सारे मेनोनाइट एक मन के हों।'' इसके लिए बहुत कार्य करने की आवश्कयता है, साथ ही बहुत धीरज, और एक दूसरे की संस्कृति को अच्छी तरह से समझने की भी आवश्यकता है। वे कहते हैं, ''हमें ऐसे लोगों के साथ चलना सीखना है जो अलग तरीके से सोचते हैं।''

वे प्रतिदिन यह प्रार्थना करते हैं, ''मैं सिर्फ अपनी मण्डली के विषय में नहीं, परन्तु विश्वव्यापी चुनौती के विषय में सोचता हूँ। यीशु ने अपने चेलों से यह आशा नहीं किया है कि वे व्यवहारिक बने, परन्तु यह कि वे विश्वासयोग्य गवाह बने और शेष सब कुछ परमेश्वर पर छोड़ दें।''

''मैं जहाँ कहीं रहूँ, मैं यीशु के समान बनना चाहता हूँ।''

– कार्ला ब्राऊन के द्वारा जारी एमडब्ल्यूसी विज्ञप्ति